



## कक्षा: 10वीं, सामाजिक विज्ञान (अर्थशास्त्र)

### पाठ: 5 वैश्वीकरण



(क) सामग्री विनाश प्रश्न:-

रिक्त स्थान भरें:-

- भारत ने वर्ष 1991 में नई आर्थिक नीति अपनाई। \_\_\_\_\_
- MNC का पूरा नाम मल्टी नेशनल कॉर्पोरेशन है। \_\_\_\_\_
- वैश्वीकरण के अंतर्गत उपभोक्ताओं के पास वस्तुओं का व्यापक विकल्प उपलब्ध है।
- सरकार द्वारा व्यापार पर लगाए गए सभी प्रकार के प्रतिबंधों को हटाना उदार नीति कहलाती है। \_\_\_\_\_
- निष्पक्ष वैश्वीकरण प्रत्येक देश को अवसर प्रदान करेगा।

बहु विकल्पीय प्रश्न:-

- दो देशों के बीच होने वाले व्यापार को कहते हैं-

(क) विदेशी व्यापार                      (ख) क्षेत्रीय व्यापार                      (c) A और B दोनों                      (सी) इनमें से कोई नहीं

उत्तर:- विदेशी व्यापार

- नई आर्थिक नीति को अपनाने के पीछे मुख्य कारण क्या थे?

(क) भुगतान संतुलन में घाटा                      (b) मुद्रास्फीति की दर में वृद्धि  
(ग) विदेशी मुद्रा भंडार में घाटा                      (एस) उपरोक्त सभी

उत्तर:- उपरोक्त सभी

- भारत विश्व व्यापार संगठन का सदस्य कब बना?

(क) 1 जनवरी 1994                      (बी) 1 जनवरी 1995  
(सी) 1 जनवरी 1996                      (एस) 1 जनवरी 1997

उत्तर:- 1 जनवरी 1995

- तटस्थ वैश्वीकरण क्या है?

(क) सभी के लिए समान लाभ                      (ख) कुशल और अकुशल श्रमिकों के लिए समान अवसर।  
(c) A और B दोनों                      (सी) इनमें से कोई नहीं

उत्तर:- A और B दोनों।

सत्य/असत्य :-

- (i) एक बहुराष्ट्रीय निगम केवल एक ही देश में अपना व्यवसाय स्थापित कर सकता है। (गलत)
- (ii) प्रौद्योगिकी एक प्रमुख शक्ति के रूप में उभरी, जिससे वैश्वीकरण को बढ़ावा मिला। (सही)
- (iii) पंजाब और हरियाणा के बीच व्यापार विदेशी व्यापार का एक उदाहरण है। (गलत)
- (iv) भारत ने 1995 में नई आर्थिक नीति अपनाई। (गलत)
- (v) भारत जैसे देश में तटस्थ वैश्वीकरण की बहुत आवश्यकता है। (सही)

अति लघु उत्तरीय प्रश्न -

- (i) वैश्वीकरण से आप क्या समझते हैं?

अंग्रेजी में इसे ग्लोबलाइजेशन कहते हैं। वैश्वीकरण घरेलू/घरेलू अर्थव्यवस्थाओं की संख्या बढ़ाने की प्रक्रिया है। उत्तर: वैश्वीकरण एक बहु-

संपूर्ण विश्व राष्ट्रीय निगमों द्वारा विदेशी व्यापार और निवेश के लिए खुला है।

- (ii) बहुराष्ट्रीय निगम से आप क्या समझते हैं?

उत्तर:- बहुराष्ट्रीय निगम एक व्यावसायिक कंपनी है जिसका व्यवसाय संचालन एक से अधिक देशों में होता है।

ये वे हैं जिनका मुख्य उद्देश्य घरेलू उत्पादकों के साथ प्रतिस्पर्धा करके अपने उत्पादों को सस्ती कीमतों पर बेचना है।

इसे प्राप्त करना होगा।

- (iii) उदारवाद का क्या अर्थ है?

उत्तर:- उदारवाद का अर्थ है सरकार द्वारा व्यापार पर लगाए गए सभी प्रकार के प्रतिबंधों को कम करना।

- (iv) विदेशी व्यापार से क्या तात्पर्य है?

उत्तर:- विभिन्न देशों के बीच होने वाले व्यापार को विदेशी व्यापार कहते हैं।

- (v) विदेशी निवेश नीति से क्या तात्पर्य है?

उत्तर:- विदेशी व्यापार के लिए सरकार द्वारा बनाए गए कानूनों या नियमों को विदेशी निवेश नीति कहते हैं। या विदेशी निवेश नीति वह नीति है जिसका उपयोग किसी देश या उसके लोगों द्वारा दूसरे देशों में आय/लाभ अर्जित करने के लिए किया जाता है।

इसे करने के उद्देश्य से बनाया गया है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में दीजिए:-

- (i) भारत सरकार ने प्रथम पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत विदेशी व्यापार और विदेशी निवेश पर प्रतिबंध क्यों लगाए?

पहली पंचवर्षीय योजना के दौरान उत्तर भारतीय सरकार द्वारा विदेशी व्यापार और विदेशी निवेश पर प्रतिबंध लगाने का कारण यह था कि भारत अनिश्चित काल तक ब्रिटिश शासन के अधीन रहा था। इसके अलावा, भारत का आर्थिक शोषण भी हो रहा था।

कारण यह था कि सभी घरेलू उत्पादक दिवालिया हो चुके थे। आज़ादी के बाद उस समय भारतीय उत्पादक इस स्थिति में नहीं थे।

ताकि वे विदेशी व्यापारियों या उत्पादकों से प्रतिस्पर्धा कर सकें। इसलिए, आज़ादी के बाद, भारतीय उत्पादकों ने विदेशी व्यापारियों या उत्पादकों से प्रतिस्पर्धा नहीं की।

प्रतिस्पर्धा से बचाव के लिए भारत सरकार ने विदेशी व्यापार और विदेशी निवेश पर प्रतिबंध लगा दिए थे।

(ii) भारत सरकार ने विदेशी व्यापार और विदेशी निवेश पर प्रतिबंध कब और क्यों हटाए? व्याख्या कीजिए।

उत्तर भारत सरकार ने 1991 में विदेशी व्यापार और विदेशी निवेश पर लगे प्रतिबंध हटा दिए थे क्योंकि उस समय

आर्थिक सुधारों की आवश्यकता उत्पन्न हो गई थी। नई आर्थिक नीति की शुरुआत में यह निर्णय लिया गया था कि भारतीय

अब समय आ गया है कि उत्पादक अंतर्राष्ट्रीय बाजार में अन्य देशों के उत्पादकों के साथ प्रतिस्पर्धा करें।

यह भी सोचा गया कि इस प्रतियोगिता से घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय उत्पादकों के प्रदर्शन में सुधार होगा।

इससे बाजार में इन उत्पादों की गुणवत्ता में भी सुधार होगा। इसलिए, इस नीति के तहत, विदेशी व्यापार और विदेशी निवेश

निवेश पर लगे प्रतिबंध व्यापक रूप से हटा दिए गए। इससे आयात और निर्यात पहले से कहीं अधिक प्रतिस्पर्धी हो गए।

इसे आसान बना दिया गया और विदेशी कंपनियों ने उत्पादों का उत्पादन और बिक्री करने के लिए भारत में अपने कारखाने और कार्यालय स्थापित किए।

इस प्रकार इसकी स्थापना हुई।

(iii) भारत ने 1991 में नई आर्थिक नीति क्यों अपनाई? कारण लिखिए।

उत्तर - वर्ष 1991 में भारत द्वारा नई आर्थिक नीति अपनाने के निम्नलिखित कारण थे -

1. भारत सरकार ने सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों पर भारी राशि खर्च की लेकिन ये इकाइयाँ

प्राप्त आय बहुत कम थी। इसलिए, सरकार की आय और व्यय के बीच का अंतर बढ़ता गया, जिससे सरकार को भारी राजकोषीय घाटा हुआ। इस घाटे को कम करने के लिए, भारत सरकार ने एक नई आर्थिक नीति अपनाने का निर्णय लिया।

नीचे रख दें।

2. भुगतान संतुलन में घाटा काफ़ी बढ़ गया था। इसे ठीक करने के लिए सरकार ने बाहरी उधारी पर भरोसा किया।

ऋण की यह राशि इतनी अधिक हो गई थी कि सरकार के लिए इसे चुकाना मुश्किल हो रहा था। इसलिए एक नई आर्थिक नीति अपनाना आवश्यक हो गया।

3. सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों द्वारा उत्पादित उत्पादन बहुत कम था, जिसके परिणामस्वरूप यह क्षेत्र

बाज़ार वस्तुओं की बढ़ती माँग को पूरा करने में सक्षम नहीं है। इसलिए सरकार को अपनी आर्थिक नीति में बदलाव करना पड़ रहा है।

इसके अलावा कोई और विकल्प नहीं है।

4. सरकार बड़ी मात्रा में माल आयात करने पर प्रतिबंध लगा दिया गया, जिसके परिणामस्वरूप आयातित माल की कमी हो गई।

विधेयक पारित हुआ और संकट इतना गंभीर था कि तत्कालीन सरकार ने उस पर जुर्माना लगाने और जुर्माने की राशि तय करने का निर्णय लिया।

नहीं कर्ज़ चुकाने के लिए सोना विदेश में रखना पड़ा। इसलिए सरकार ने अपनी आर्थिक नीति बदलने का फैसला किया।

ऐसा माना जाता था।

5. सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों के दयनीय/खराब प्रदर्शन के कारण सरकार को निजीकरण की नीति अपनानी पड़ी है।

में किया किसी विधिकपाहत के तुरंत यह दे देता।

6. 1990-91 में ईरान और इराक के बीच हुए खाड़ी युद्ध के कारण पेट्रोल की कीमतों में भारी वृद्धि हुई।

भारत का भुगतान संतुलन और भी निराशाजनक हो गया।

(iv) वैश्वीकरण का देश के छोटे उत्पादकों पर क्या प्रभाव पड़ा है?

उत्तर:- वैश्वीकरण की नीति का छोटे उत्पादकों और व्यापारियों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। इस प्रकार, कई घरेलू उत्पादकों

जिन उत्पादकों के उत्पाद आयातित वस्तुओं के समान थे, वे अपने उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार करने में सक्षम थे।

वे आयातित वस्तुओं के साथ प्रतिस्पर्धा नहीं कर सके और परिणामस्वरूप उन्हें व्यापार से बाहर होना पड़ा।

लेट जाओ।

(v) क्या वैश्वीकरण का प्रभाव सभी पर एक समान नहीं रहा है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- वैश्वीकरण पर हमेशा यह आरोप लगाया जाता है कि यह केवल विकसित देशों के लिए ही लाभकारी है और

विकासशील और विकसित, दोनों ही देश इससे लाभान्वित नहीं हो पाए हैं। कई प्रमाण इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि

वैश्वीकरण इससे समान लाभ नहीं मिला है। केवल वे देश जिनके पास अपेक्षाकृत कम विशेषज्ञता और धन है

की प्रक्रिया से केवल कुछ देशों को ही नए अवसर प्राप्त नहीं हुए और उन्होंने उनका भरपूर लाभ उठाया, बल्कि कई अन्य देशों ने भी ऐसा किया।

आर्थिक वैश्वीकरण से अपेक्षित लाभ नहीं मिले हैं। अगर हम भारत की बात करें, तो पिछले लगभग 20 वर्षों में इन देशों में वैश्वीकरण का उपभोक्ताओं और उत्पादकों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है।

रूप से, उपभोक्ता

नहीं वैश्वीकरण से उन्हें लाभ हुआ और उत्पादों के व्यापक विकल्प मिले, लेकिन श्रमिक वर्ग इसका लाभ नहीं उठा सका। वैश्वीकरण के आगमन से भारतीय उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा बढ़ गई। भारत की

शीर्ष कंपनियाँ

विदेशी कम्पनियों से कड़ी प्रतिस्पर्धा के कारण, बाजार से बाहर हो जाने के डर से, उन्हें अपनी स्वयं की प्रौद्योगिकी और प्रौद्योगिकी लाने की आवश्यकता महसूस हुई है।

वस्तुओं की गुणवत्ता में सुधार।

(vi) विदेशी व्यापार और विदेशी निवेश नीति के उदारीकरण ने वैश्वीकरण की प्रक्रिया में किस प्रकार सहायता की? उत्तर: उदारीकरण का अर्थ है व्यापार पर सरकार द्वारा लगाए गए सभी प्रकार के प्रतिबंधों

को कम करना या हटाना। उदारीकरण की नीति ने विदेशी व्यापार और विदेशी निवेश पर लगे प्रतिबंधों को काफी हद तक हटा दिया है।

आयात-निर्यात व्यापार पहले से कहीं अधिक आसान हो गया। विदेशी कम्पनियाँ भारत में विनिर्माण करने लगीं।

इसके कारण उन्होंने भारत में अपनी फैक्ट्रियाँ और कार्यालय स्थापित किए हैं। विदेशी व्यापार

और विदेशी निवेश नीति में उदारीकरण की नीति ने वैश्वीकरण की प्रक्रिया में बहुत मदद की है।

(vii) संक्षेप में उन कारकों की व्याख्या करें जिन्होंने भारत को वैश्वीकरण की ओर अग्रसर किया?

उत्तर:- भारत के पास 1. वैश्वीकरण को बढ़ावा देने वाले कुछ महत्वपूर्ण कारकों का वर्णन इस प्रकार है:-

प्रौद्योगिकी:- हर क्षेत्र में प्रौद्योगिकी में तेजी से सुधार ने इसे वैश्वीकरण की प्रक्रिया शुरू करने की शक्ति दी है।

इस तकनीक ने विभिन्न देशों को एक-दूसरे के साथ बहुत आसानी से संपर्क में रहने में सक्षम बनाया है।

दूरसंचार, टेलीफोन, कंप्यूटर, इंटरनेट, मोबाइल फोन, फैक्स मशीन आदि के क्षेत्र में तकनीकी विकास ने भी दुनिया को बदल दिया है।

जमीन पर संपर्क बनाने में मदद मिली है।

2. विदेश व्यापार और विदेश नीति:- स्वतंत्रता के बाद, भारत ने केवल

केवल आवश्यक वस्तुओं के आयात की अनुमति थी। भारत ने 1991 ई. में नई आर्थिक नीति अपनाई। विदेशी

व्यापार पर सभी प्रतिबंध हटा दिए गए, जिससे भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व अर्थव्यवस्था के साथ एकीकृत हो गई।

3. विश्व व्यापार संगठन:- विश्व व्यापार संगठन एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन है जिसका उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा देना है।

भारत इस संगठन का सदस्य है। माल और सेवाओं में मुक्त व्यापार 1995 से इसका सदस्य है।

## ACTIVITY

अपने दोस्तों के साथ उन चीजों (टूथपेस्ट, साबुन, शैम्पू, बिजली के सामान, आदि) के बारे में चर्चा करें जिनका आप रोज़ाना इस्तेमाल करते हैं। जाँच कीजिए कि इनमें से कौन-सी चीज़ें किसी बहुराष्ट्रीय कंपनी द्वारा निर्मित हैं?

शुंखला नहीं।	वस्तुओं	कंपनी	क्या यह एक बहुराष्ट्रीय निगम (एमएनसी) है?
1.	टूथपेस्ट (जैसे कोलगेट)	कोलगेट पामोलिव-	हाँ
2.	साबुन, क्रीम, बॉडी लोशन (जैसे लक्स, डव, फेयर एंड लवली / ग्लो एंड लवली, वैसलीन)	हिंदुस्तान यूनिलीवर लिमिटेड (एचयूएल)	हाँ
3.	शैम्पू, ब्रश, नेल पॉलिश, कपड़े धोने का डिटर्जेंट (जैसे हेड एंड शोल्डर्स, ओरल-बी, एरियल)	प्रोक्टर और जुआ	हाँ
4.	विद्युत बल्ब (जैसे फिलिप्स बल्ब)	प्रकट करना	हाँ
5.	वाशिंग पाउडर (जैसे सर्फ एक्सेल)	हिंदुस्तान यूनिलीवर लिमिटेड (एचयूएल)	हाँ
6.	ठंडे पेय (जैसे कोका-कोला, पेप्सी)	कोका-कोला, पेप्सिको	हाँ

हम रोज़ाना जिन उत्पादों का इस्तेमाल करते हैं, उनमें से कई बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा निर्मित होते हैं। ये कंपनियाँ दुनिया भर में काम करती हैं और अपने उत्पाद अलग-अलग देशों में बेचती हैं।

वे बेचते हैं।

**नोट:** उपरोक्त गतिविधियाँ केवल शिक्षकों/छात्रों के मार्गदर्शन के लिए बनाई गई हैं, शिक्षक इन गतिविधियों के लिए जिम्मेदार नहीं हैं।

गतिविधियाँ अपनी समझ, कौशल और तकनीक की मदद से भी की जा सकती हैं। ऊपर दी गई तस्वीरें/जानकारी

इस उद्देश्य के लिए, जीपीटी का उपयोग किया गया है।

**योगदात्र:** हरदाबुंदर थसुंग (राज्य संसाधन व्यक्ति, सामाजिक विज्ञान) एससीईआरटी पंजाब, (अस.सी.पी.आर.टी. पंजाब,

रणजीत कौर (ला. इतिहास) एस.एस.एस.एस. स्कूल एल. छिन्ना बेट, गुरेदासपुर और एस.पु. अडे

मनदीप कौर (एस.एस.थमस्ट्रेस) एस.के.एस.एस.एस.दखा लुथधाना, पियाष्टा।